अस्तित्व बचाने के लिए संघर्ष करती बेटियां

राष्ट्रीय बालिका दिवस : 24 जनवरी पर विशेष

- विष्णुकांत तिवारी
छात्र, एमसीयू

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि भारत ही एक मात्र ऐसा देश है, जहाँ सबसे पुरातन सभ्यता में भी लिंग भेद का जिक्र नहीं है। हालांकि यहाँ पर यह भी कह देना सही होगा कि हमने अपनी परम्पराओं को मिट्टी पलीद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

अर्थव वेद में बालकों की ही भांति बालिकाओं के लिए भी शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक थी, जो कि अथर्व वेद के इंगित अध्याय में पढ़ा जा सकता है। कहाँ तो गार्गी और मैत्रयी जैसे नाम धार्मिक इतिहास में देखने को मिलते हैं, और कहाँ आज का समाज - अपने आप को प्रगति का पर्याय मानते हुए भी अपनी बालिकाओं को एक सुरक्षित आबो हवा और बराबरी का हक नहीं दे पा रहा है।

आज इस लेख में हम भारत की कुछ ऐसी बालिकाओं के बारे में ज़िक्र करेंगे जिन्होंने ना सिर्फ अपने सपनों को हकीकत में तब्दील किया है, बल्कि इसी मूढ समाज का सर गर्व से ऊंचा किया है।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की ओर से यह पहल 2008 में की गयी थी। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी को नारी शक्ति के रूप में याद किया जाता है, 24 जनवरी को ही इंदिरा गांधी पहली बार प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठी थीं और यही वजह है कि 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस के रूप में मनाने का फैसला लिया गया।

इसके उद्देश्य की बात करें तो कुल मिलाकर यह लड़कियों को समान अधिकार देने से संबंधित है। एक महान और गौरवान्वित इतिहास से सराबोर भारत देश में लड़कियों को जिन असमानताओं का सामना करना पड़ता आया है, उसको समाज के सामने लाना और लोगों के बीच बराबरी का अहसास पैदा करना, लड़कियों के अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण समेत कई अहम विषयों पर जागरूकता पैदा करना है।

तकनीकी के इस युग में भी लिंग भेद एक कठिन समस्या बन कर बैठा हुआ है और इस पर उतना ही ध्यान देने की आवश्यकता है जितनी कि रोजमर्रा के किसी और काम पर। जितना महत्वपूर्ण जीवन जीना है उतना ही ज़रूरी समान अधिकारों के साथ जीना है अन्यथा जीवन के अस्तित्व और इसकी उपयोगिता पर ही सवाल मंडराने लगता है।

लैंगिक भेदभाव बहुत बड़ी समस्या है, विचार करें तो कितनी ही भद्दी बात लगती है कि सिर्फ शरीर के बनावट के आधार पर किसी को भेदभाव और ज़िल्लत का सामना करना पड़ सकता है।

लड़कियों को शिक्षा, कानूनी अधिकार और सम्मान जैसे मामलों में तो असमानता का शिकार होना ही पड़ता है लेकिन ये उनकी परेशानियों का सीमान्त नहीं है बल्कि उन्हें हर बार घर से बाहर कदम रखने के लिए मानसिक रूप से तैयार होना पड़ता है, हर प्रकार के खतरों के लिए फिर चाहे वो असमानता की फब्तियां हों या उनकी अस्मिता पर गली चौराहों पर प्राणघातक हमला हो।

जहाँ इतनी कठिनाइयाँ हैं वहीं कई ऐसे उदाहरण भी है जहाँ ये सारे परेशानियाँ इस देश की जांबाज लड़कियों ने सिरे से नकार दिया है और अपनी मंजिलों को अपने कदमों पर ला कर खड़ा कर दिया है।

फिर चाहे वो कल्पना चावला रहीं हों या फिर दिव्या सूर्यदेवरा, दीपा कर्माकर, गीता गोपीनाथ, हिमा दास, टेसी थॉमस, लतिका नाथ, अरुणिमा सिन्हा या शिवांगी सिन्हा हो जो इस देश की पहली महिला नौसेना पायलट है।

इस अभियान का मकसद सम्पूर्ण भारत के लोगों को लड़कियों के अधिकारों के प्रति जागरुक करना है। साथ ही लोगों को यह बताना है कि समाज निर्माण में महिलाओं का बराबर का योगदान है। इस अभियान के तहत माता-पिता के साथ ही समाज के तमाम तबकों के लोगों को शामिल कर उन्हें इस बात के लिए जागरुक किया जाता है कि लड़कियों के पास भी फैसले लेने का अधिकार है और यह समाज के हर अंग कि जिम्मेदारी है

कि वो बालिकाओं को अपनी बात कहने का, अपने विचार रखने का, सपने देखने का, सपने को पूरा करने के लिए मेहनत करने का एक सशक्त माध्यम दें ताकि समाज के किसी अन्य व्यक्ति की तरह ही बेख़ौफ़ होकर जीवन जी सकें। बहुत ज़रूरी यह हो जाता है कि समाज का परिवेश वैसा बनाया जाये जिसमें कि महिलाओं को बालिकाओं को अपने अस्मिता और आबरू के लिए देश के अन्य लोगों से लड़ना न पड़े। पैदा करने के पहले एक पिता को यह न सोचना पड़े कि उसकी बेटी सुरक्षित रहेगी इस दुनिया में या नहीं और एक माँ को यह न सोचना पड़े कि उसकी लाड़ली को अपनी इज्जत बचाने के लिए इस देश में कितनी जद्दोजहत करनी पड़ेगी।

रीति-रिवाजों के बीच, देश अपनी ही बेटियों का अस्तित्व बचने के लिए जूझ रहा है और शर्म तो इस बात पर आ रही है कि आज हम अपने आप को आज़ाद देश का नागरिक कहते हैं। समाज में लड़कियों की इतनी अवहेलना, इतना तिरस्कार चिंताजनक और अमानवीय है।

भारतीय समाज में लड़कियों के प्रति जो नजरिया है, पितृसत्तात्मक सोच का जो वास है, सामजिक-आर्थिक दबाव, हर पल शरीर में अन्दर घुलता डर, चिंता और भय का माहौल इस देश में बहुत ही आम हो गया है और यही इस देश की सबसे बड़ी विडम्बना है।

महिला देवी होती है, महिला भगवती होती है जिस देश की आत्मा में यह विचार बस्ता हो उस देश में यह स्थिति कि अपने ही गली मोहल्लों में ज़रा सी देर हो जाये तो, कभी अकेला निकलना हो, किसी का भाई ना हो तो तलवार की धार पर से चलने का माहौल हो जाता है।

बालिका दिवस की सभी को शुभकामनाएं देते हुए महज एक ही बात कहना चाहूँगा कि ये महज शर्म और घोर शर्म करने की स्थिति है, इसका किसी भी प्रकार से या किन्ही भी शब्दों से जायज ठहराया जाना हकीकत में अपने समाज, अपनी सभ्यता और इस देश के साथ गद्दारी ही कहलाई जायेगी। (प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।